74ME4S

पाठ 18

मितानी

-लोककथा

हमर देश के संस्कृति म मितानी के अब्बड़ महत्तम हे। राम–सुग्रीव अउ कृष्ण–सुदामा के मितानी के बारे म तुमन जानत होहू। वइसे तो मिलइया–जुलइया मनखे मन के बीच म मितानी होइ जाथे,पर छत्तीसगढ़ म मितानी के एक नवा रीत हवय। ओ आय मितानी बदे के परंपरा। मितानी के नता ह कई पीढ़ी के नता आय। मितान बदइया के लइका अउ नाती–नतुरा मन घलो ये नता ल बड़ मान देथें। मितान के विपत्ति म सहायता करना सबले बड़का धर्म आय। आवव, अइसने एक ठन लोककथा पढ़न,जेमा केछवा और मँजूर के मितानी के बारे म बताय गय हे।

तरिया के निरमल पानी म खोखमा के सुग्घर–सुग्घर फूल – फूले रहँय। फूल म तितली अउ भौंरा मन लुर–लुर के गीत गावत रहँय। तरिया के तीर बर,पीपर,आमा,अमली के घन पेड़ रहँय। ओ तरिया म एक ठन केछवा रहय। ओही तरिया पार के पीपर पेड़ म एक ठन मँजूर घलो रहय। एहर तीर–तखार के खेत–खार म जा के चारा चरय अउ पीपर पेड़ म बसेरा करय। जब करिया–करिया बादर उमडे–घुमड़े त मँजूर हर अपन पाँख ल छितराके झूम–झूमके नाचय। एती हवा ले पीपर पान झूम–झूमके गीत गावय अउ ताली बजावय। केछवा हर तरिया ले निकल के मँजूर के नाचा ल देख के मगन हो जाय।

केछवा हर मँजूर ल कथे–'वा भाई मँजूर, तँय तो बढ़िया नाचथस अउ तोर पाँख हर बहुत सुग्घर सजे हे। लगथे अगास के चंदा–चँदैनी हर पाँख म उतरे हें।' सुन के मँजूर हर मनेमन मुचमुचाइस। मँजूर हर रोज पीपर के रूख ले उतर के तरिया के पार म नाचय। केछवा हर ओला मन भर के देखय। मँजूर हर तरिया के पानी पी के पीपर पेड़ म बइठ के अराम करय अइसन तरह ले मँजूर अउ केछवा म दूनों के पोठ मितानी होगे।

एक दिन मँजूर हर मगन होके नाचत रहिस त केछवा हर किहिस–''मितान ! लकठा म आके नाचव न! काबर के तुँहर नचाई हर मोला नीक लागथे। मन के अघात ले देखे चाहत हँव।'' मँजूर ह केछवा के मया के गोठ ल टारे नइ सकिस अउ तीर म आके नाचे लगिस। अब अइसन रोज होवय. ... मँजूर नाचे अउ केछवा हर देखे। मितानी म मया के धार बोहाय लागिस।

एक दिन संझा सिकारी आके उहाँ अपन फाँदा ल फैला दिस। एला केछवा अउ मँजूर नइ जानिन। बिहनिया ओमा मँजूर ह फँदगे। अब तो मँजूर के करलाई होगे। अपन मितान ल कथे–"मितान!मोला बचावव,सिकारी आही, तहाँ मोला मार डारही। तोर मितानी अउ मया म परान गँवा डारहूँ, तइसे लागथे। उबारे के कुछु उदिम करव।" केछवा बड़ चतुरा रहिस। ओहर हड़बड़ाइस नहीं। फाँदा म परे मितान ल कथे–"काहीं फिकर झन करव। धीरज बाँधे रहव,तुँहला फाँदा ले छोड़ाहूँ। संकट के बेरा मितान हर मितान के काम नइ आइस त ओहर मितान नोहय।"

एती दूनो मितान के गोठ होते हे अउ ओती सिकारी आगे। फाँदा म फँदे मँजूर ल धरके फाँदा ले निकाले लगिस त केछवा हर सिकारी ल कथे –"तँय तो मोर मितान ल फाँदा म फोकट फँसाए हस। एला मार के का करबे ?" अतका म सिकारी हर हाँसत कथे–"फसातेंव नहीं त का करतेंव। एहर मोर धंधा आय। एला मारँव नहीं, बजार म बेंच के रुपिया पाहूँ अउ दार–चाँउर बिसाहूँ ....।"

केछवा कथे–"बस अतकेच। छोड़ दे, मोर मितान ल। जंगल के कोनो जीव ल मारे ले हत्या लगथे। एला छोड़बे त एकर बदला म तोला एक ठन बढ़िया चीज देहूँ, जेन ल बेंच के तोर परिवार बर दार–चाउँर बिसा लेबे।" सिकारी कहिस–"तोर का बिंसवास।" केछवा हर पानी भीतर बुड़िस अउ छिन भर म एक ठन मोती लान के कथे–"ले ! एहर मोती आय,बेचबे त खूब पइसा मिलही।"

सिकारी हर मोती ल लेके खुश होगे। मँजूर ल छोड़ दिस अउ कुलकत घर आइस। सिकारी के दू झन बेटा रहँय–कोंदा अउ मंसा। सिकारी हर अपन दूनो बेटा ल मोती ल देखाइस त ओला ले बर दुनो झन झगरा होय लगिन। ऊँकर मनके झगरा ल देख के सिकारी ह सोंचिस–'मोती ह बड़ कीमती हे, एला छोड़त नइ बने,अउ छोड़त हँव त घर म झगरा हे।' सिकारी हर असमंजस म परगे।

एक दिन ओही मेर फाँदा ल फेर फैलाइस।.... मँजूर फँदगे। एक पइँत परान बचे रहिस। अब का होही ? केछवा अउ मँजूर ल गुने ल परगे। मँजूर कथे–"मितान! एक पइँत परान ल फेर बचावव।" केछवा ल कुछू उपाय सुझत नइ रहय। कथे–"हाँ,मितान! तोला बचाए बर गुनत हँव, ये पइँत जान बचगे त तोला ये ठउर ल छोड़के जंगल म जाए ल परही,जिंहा ये सिकारी झन जा सकय। ओहर बड़ लालची हे। मोती के लालच म घेरी–बेरी फाँदा ल खेलही।" केछवा के गोठ ल सुन के मँजूर ल थोकिन दु:ख लगिस फेर सोंचिस, परान बचाय बर मितान के मया ल छोड़ के जंगल बीच जाएच ल परही। अतका म सिकारी आ गे। मँजूर ल फाँदा म फँदे देख के कुलक गे। एती केछवा हर सिकारी ल कथे– "ये सिकारी भाई! मोर मितान ल काबर फँसाए हस? तोला तो महीना भर के खरचा के पुरता मोती दे रहेंव। अइसन लालच झन कर,एहर अनियाव आय।"

सिकारी कथे–"तैं तो बात बड़ नियाँव के कहत हस। एमा मोर कोती ले कोनो लालच नइये। मोती ल देखके मोर दूनो बेटा मन मोती ल ले बर झगरे लगिन,मारा–पीटा करे लगिन।ओ मन ल झगरा ले बचाय खातिर मोला फाँदा डारे बर परिस हे। अब ओइसनेच मोती लान के अउ दे देवव त मैं ह ये मँजूर ल ढील देहूँ। मोती ह ओइसनेच होना चाही–न घट,न बढ़।"

केछवा ल उपाय सूझगे। ओ ह सिकारी ल कथे–"सिकारी भइया !ओइसनेच मोती लाने खातिर पहिली वाले मोती के नाप–जोख करे बर परही,तउले बर परही। मैं तोला ओइसनेच मोती दे बर

तियार हँव। फेर पहिली वाले मोती ल लान के तैं मोला दे दे।'' केछवा के बात ल सुन के सिकारी के मन कुलक गे। मन म थोरिक लालच अमागे। ओहा केछवा के बात ल मान गे। फाँदा ले मँजूर ल ढील दिस, सिकारी मंजूर उड़िया गे अउ मोती ल लाय बर घर कोती दउँड़गे।

सिकारी ह मोती लान के केछवा ल दे दिस। केछवा ह मोती ल पानी म फेंक दिस अउ सिकारी ल किहिस–''तँय एक मोती लेवस नहीं अउ मँय ह दू मोती देवँव नहीं।आज तँय बेटा मन के खातिर फाँदा डारे हस। काली अपन घर–गोसइन के कहे म फाँदा डारबे। परनदिन अपन परोसी मन खातिर इही बूता करबे। तोर लालच ह बाढ़तेच जाही। तैं लालची भर नइ हस,बिंसवासघाती घलो हस।'' अइसे कहिके केछवा ह पानी भीतर डुबकी मार दिस। सिकारी ह हाथ रमजत रहिगे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

लुर–लुर करना	=	मँडराना	पोठ	=	समृद्ध
लकठा	=	समीप,नजदीक	नीक	=	अच्छा,सुंदर
अघात	=	तृप्त होना	गोठ	=	बात या बातचीत
फाँदा	=	जाल	करलइ	=	दुःख,व्यथा,विलाप
उदिम	=	उपाय	कुलक भरिस	=	खुश हुआ,
ढिलना	=	मुक्त या स्वतंत्र करना			प्रफुल्लित हुआ
रमजत	=	मलता हुआ, रगड़ता हुआ	ठऊर	=	स्थान

अभ्यास

पाठ से

1. मंजूर हर अपन पाँख ल काबर छितराय हे ?
2. केछवा ह मंजूर ल पहिली बार देखके का कहिथे ?
3. मंजूर ह सिकारी के फाँदा मा कइसे फँदगे?
4. अपन मितान के छोड़े के खातिर केछुवा ह सिकारी ल का कहिथे?
5. सिकारी ह मंजूर ल काबर छोड़ देथे ?
6. सिकारी के लालच बाढ़े के का कारण रहिस ?
7. आखिर म केछवा ल का उपाय सूझिस अउ ओ हर का करिस ?
8. सिकारी ह काबर पछतावत रहिगे ?

पाठ से आगे

1. मंजूर सहीं कहूँ तुम्हर मितान कोनो मुसीबत में फस जाही त तुमन ओला उबारे बर का उदिम करहू ? सोच के लिखव।

2. मंजूर के जगह म केछ्वा ल सिकारी फँसा लेतिस त केछ्वा ल बचाय बर मंजूर का सोचतिस? साथी मन संग चर्चा करके लिखव।
3. मंजूर ल फाँदा म फँसे देखके केछवा कहूँ भाग जातिस त दूनो के मितानी मा का परभाव पड़तीस सोच के लिखव।
4. सिकारी ह मोती के लालच म पहिली मोती ल घलो गवाँदिस अउ लालच नई करतिस त ओकर जीवन म का सुधार होतिस ? साथी मन संग सोच के लिखव।

भाषा से

1. खाल्हे लिखाय मुहावरा मन के अर्थ लिखव अउ वाक्य म परयोग करव– पोटा–काँपना, करलइ होना, असमंजस म परना, लालच म परना।
2. पाठ म आय 'मितानी' व 'सिकारी' शब्द भाववाचक संज्ञा आय जौन ह मितान, सिकार शब्द म 'ई' प्रत्यय लगके बने हवय। अइसने 'ता' प्रत्यय लगा के 'महान' के महानता 'शत्रु' के शत्रुता शब्द बनाय जाथे। अइसने खाल्हे लिखाय शब्द मन ल **ई** अउ **ता** प्रत्यय लगाके बनावव–
   बीमार, सच्चा, बुरा, प्रबल, विमुख, कांत, शिष्य।
3. खाल्हे लिखाय शब्द मन ल पढ़व–
   रहय–रहना, गावय–गाना, करय–करना, छितरावय–छितराना, मुचमुचावय–मुचमुचाना, लागय–लगना ये सब शब्द मन ह कोनों काम के होय के बोध कराथे इही ल क्रिया कहे जाथे। अइसने पाठ में आय क्रिया शब्द ल खोज के हिंदी में अर्थ लिखव।
4. खाल्हे लिखाय शब्द मन के हिंदी में अर्थ लिखव अउ ओकर उल्टा शब्द लिखव– मितानी, खुश, चतुरा, बिसाना, तीर।
5. उचित संबंध जोड़व–

क	ख
खोखमा	फाँदा
मंजूर	निरमल
पानी	सुघ्घर
भौंरा	पाँख
सिकारी	गीत

योग्यता विस्तार

1. अपन आसपास म मितानी के कोनों किस्सा सुने होहू ओला लिखव।
2. राम अउ सुग्रीव के मितानी के बारे में पता करके अपन भाषा म लिखव।

●●●